पूरे विश्व में चलाया जा सकता है। क्षेत्रीय बाजारों के लिए अलग से संस्करण निकालने की आवश्यकता नहीं पड़ती। किसी भी भाषा या टेक्स्ट पूरे संसार में बिना अवरोध के चल जाता है। पहले उदाहरणार्थ यदि हम हिन्दी टाइपिंग करना चाहते हैं तो एम एस ऑफिस (MS office) खोलकर और कृतिदेव 10 फॉन्ट सुनकर उस पर टाइपिंग शुरू कर देते हैं क्योंकि हिन्दी टाइपिंग के लिए इसी तरीके का सबसे अधिक उपयोग किया जाता है। इसमें समस्या तब आती है जब कृतिदेव फॉन्ट में टाइप मैटर को किसी अन्य कम्प्यूटर में लेकर जाते हैं या उस मैटर को मिलाते हैं तो उसका प्रारूप ही बदल जाता है। इसका कारण यह होता है कि कृतिदेव 10 फॉन्ट में टाइप मैटर का व्यू मात्र हिन्दी होता है। वह वास्तविक हिन्दी नहीं होती क्योंकि इस मैटर को जब हम दूसरे स्थान पर देखेंगे तो डिब्बे डिब्बे से दिखायी देंगे। जैसे हम कोई लेख कृतिदेव में लिखकर भेजते हैं तो दूसरा व्यक्ति अगर उसके पास यूनिकोड नहीं है तो वह नहीं पढ़ पाएगा। इसीलिए यूनिकोड प्रणाली का विकास किया गया।

यूनिकोड प्रणाली के माध्यम से हम जो भी मैटर टाइप करते हैं वह मैटर कहीं पर भी देखें, चाहे कॉपी/पेस्ट करें तो भी मैटर हमेशा हिन्दी या संबंधित भाषा (उड़िया, कन्नड, तैलगू आदि जिस भी भाषा में हम टाइप करना चाहते हैं) में ही दिखाई देगा। एंड्रायड मोबाइल में यूनिकोड प्रणाली ही होती है। इसी कारण हम मोबाइल में हिन्दी में सेवनाम और मैसेज देख पाते हैं। फेसबुक और गूगल आदि पर भी हिन्दी अपडेट्स कर पाते हैं। यूनिकोड प्रणाली के महत्व को देखते हुए ही सरकार ने सन् 2004 में यह कानून बनाया था कि अब से जो भी कम्प्यूटर बनेंगे उसमें यूनिकोड का ऑप्शन जरूर रखा जाएगा। यह प्रोग्राम कम्प्यूटर में in-built होता है और इसके लिए अलग से कोई भुगतान भी नहीं करना पड़ता।

Scanned by TapScanner